IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हर्षचरित : राजनीतिक जीवनी का ऐतिहासिक अवलोकन

AMAN JAISWAL
PhD Scholar
Department of History
University of Delhi

Abstract

प्राचीन भारतीय साहित्यिक परंपरा में हर्षचरित एक विशेष स्थान रखता है न केवल इसलिए क्योंकि इसे अनुशंसा या प्रशस्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है अपितु इसलिए भी कि इस ग्रंथ के अध्ययन के द्वारा हम इस काल के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को समझने में भी सक्षम होंगे। हर्षचरित सबसे आरंभिक जीवनी में से एक समझी जा सकती है जो किसी जीवित शासक के संबंध में लिखी गई है। यद्यपि इससे पहले भी चरित साहित्य अस्तित्व में था और हमको चरित साहित्य के उदाहरणों में बुद्ध चरित, दशकुमार चरित जैसे ग्रंथ देखने को मिलते है, पर हर्षचरित उसी कालखंड में लिखा गया है जिसमे बाणभट्ट और हर्षवर्धन सह अस्तित्व में थे। ऐसे में कुछ प्रश्न ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। हर्ष चरित को किस तरह से समझा जा सकता है? एक राजनैतिक प्रशस्ति के रूप में, एक पांडित्य पूर्ण और साहित्यिक शैली से परिपूर्ण संस्कृत गद्य के रूप में, उक्त कालक्रम के राजनैतिक इतिहास के दस्तावेज के तौर पर आदि। प्रस्तुत शोध पत्र में हम इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करेंगे कि प्राचीन भारतीय साहित्य परंपरा के परिपेक्ष्य में हम हर्षचरित को किस तरह स्थित कर सकते है।

Key Words : *प्रशस्ति, संस्कृति, मिथ्या, स्मृति, जीवनी*

प्राचीन भारतीय साहित्यिक परंपरा में हर्षाचरित एक विशेष स्थान रखता है न केवल इसलिए क्योंकि इसे अनुशंसा या प्रशस्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है अपितु इसलिए भी कि इस ग्रंथ के अध्ययन के द्वारा हम इस काल के राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को समझने में भी सक्षम होंगे। हर्षचरित सबसे आरंभिक जीवनी में से एक समझी जा सकती है जो किसी जीवित शासक के संबंध में लिखी गई है। यद्यपि इससे पहले भी चरित साहित्य अस्तित्व में था और हमको चरित साहित्य के उदाहरणों में बुद्ध चरित, दशकुमार चरित जैसे ग्रंथ देखने को मिलते है, पर हर्षचरित उसी कालखण्ड में लिखा गया है जिसमें बाणभट्ट और हर्षवर्धन सह अस्तित्व में थे। ऐसे में कुछ प्रश्न ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। हर्षचरित को किस तरह से समझा जा सकता है? एक राजनैतिक प्रशस्ति के रूप में, एक पांडित्य पूर्ण

और साहित्यिक शैली से परिपूर्ण संस्कृत गद्य के रूप में, उक्त कालक्रम के राजनैतिक इतिहास के दस्तावेज के तौर पर आदि। प्रस्तुत शोध पत्र में हम इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करेंगे कि प्राचीन भारतीय साहित्य परंपरा के परिपेक्ष्य में हम हर्षचरित को किस तरह स्थित कर सकते है।

हर्षचरित को सबसे आरंभिक "ऐतिहासिक जीवनी" में से एक माना जाता है और बुद्ध चरित इससे पूर्व चरित साहित्य का नमूना है। लेकिन शैलियों को विभाजित और परिभाषित करना इतना आसान नहीं है, खासकर प्राचीन ग्रंथों के लिए। ये न केवल जटिल और बहुआयामी हैं, वे पौराणिक से उपदेशात्मक तक विभिन्न शैलियों को अपनाते रहते हैं और इस प्रकार इन ग्रंथों के सरल विभाजन से बचा जाना चाहिए। साथ ही यह प्रश्न भी पूछा जाना चाहिए कि शैली को किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है? लेखक मूल उद्देश्य या उसके बाद उसका अध्ययन? साथ ही जब हम ऐतिहासिक शब्द का उपयोग करते हैं (इस आधार पर कि पाठ एक ऐतिहासिक शासक के बारे में बात करता है) तो हम दो महत्वपूर्ण बातों को अनदेखा कर देते हैं- भौतिक अभिव्यक्ति के रूप में पाठ, अपने मूर्त रूप में ऐतिहासिक समय और स्थान में रखा जा सकता है लेकिन सामग्री की सामग्री पाठ विभिन्न बिंदुओं पर ऐतिहासिकता की अवहेलना कर सकता है। साथ ही जिस तरह से हम आधुनिक समय में ऐतिहासिक ग्रंथों को देखते हैं, हो सकता है कि पूर्व आधुनिक समय में समान स्थान न मिले और शैलियों और ज्ञानमीमांसाओं का पिछड़ा प्रक्षेपण इस संदर्भ में कालानुक्रमिक दिखाई दे।[1]

हर्षचरित की विषय-वस्तु की बात करें तो, पाठ के आधार को तैयार करने के लिए विशेष रूप से कथात्मक शैलियों का उपयोग किया जाता है। ये कथानक शैलियां एक विशेष कथा बिंदु तक सुविधाजनक तरीके से पहुंचने के लिए माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। कई अन्य प्राचीन ग्रंथों की तरह, हर्षचरित भी एक मिथक के लिए ब्रह्मा, ऋषि दुर्वासा आदि जैसे पात्रों की पुनरावृत्ति को नियोजित करता है जो लेखक बाणभट्ट को अपने स्वयं के कबीले सरस्वती और वात्स्यायन की वंशावली बनाने में मदद करता है[2]। न केवल यह मिथक उसे अपने कुल के लिए एक दैवीय नियत स्थिति प्राप्त करने में मदद करता है, साथ ही साथ उसके द्वारा लिखे गए पाठ को भी वैध बनाता है। जबकि पाठ को राजा हर्ष द्वारा संरक्षित किया गया है, सत्ता और शक्ति एकतरफा नहीं है, बल्कि पारस्परिक है। हर्ष बाण भट्ट को लिखने का अधिकार देता है और बाणभट्ट अपने लेखन के माध्यम से हर्ष को सशक्त बनाता है। साथ ही बाणभट्ट द्वारा उपयोग की गई लेखन की अलंकृत शैली पाठ की दृश्यता को बढ़ाती है, जो इसके स्वागत में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा का असामान्य और अनुकरणीय उपयोग उन पाठकों या श्रोताओं को भी प्रभावित और प्रभावित करता है जो भाषा के बहुत अच्छे जानकार नहीं हैं[3]। जब इन शब्दों को जोर से पढ़ा या सुनाया जाता है तो इसका प्रभाव इसके प्राथमिक साक्षर दर्शकों को भी शामिल करता है, यहां तक कि आम लोगों को भी शामिल करता है। बाणभट्ट द्वारा "वक्रोक्ति" (भाषा के असामान्य उपयोग का प्रभाव) के रूप में जानी जाने वाली एक काव्य तकनीक का चतुर उपयोग है।[4]

---

[1] Sreedharan, E -A Textbook of Historiography 500 B.C. to 2000 A.D.,Orient Longman Pvt, Ltd., 2004

[2] N, Suryanarayana, Harshacharita, A.U., Vizianagaram

[3] Sisir Kumar Das., -A History oflndian Literature 500- 1399, From the Courtly to The Popular, Sahitya Akademy, Delhi, 2005, p.81.

[4] A Sankaran - Some Aspects of Literary Criticism In Sanskrit Or The Theories Of Rasa And Dhvani, Oriental Publisher & Bookseller, Delhi, 1926, p.45.

साथ ही साथ एक जीवनी दो तरह की स्मृतियों पर आधारित होती है पहली प्रत्यक्ष रूप से लेखक द्वारा देखी गई और दूसरी वो जो उसे बाहरी स्रोतों से प्राप्त होती हैं जिससे कई बार व्यक्ति की प्रत्यक्ष दृष्टा वृत्तांतो की प्रकृति में भी परिवर्तन आता है। हेडन व्हाइट ने तथ्य और कल्पना के बीच के अंतर के मिथक का भंडाफोड़ किया था क्योंकि एक अर्थ में हर पाठ एक कथा पैटर्न का अनुसरण करता है, खुद को व्यक्त करने के लिए एक विशेष बयानबाजी का चयन करता है और एक लक्षित दर्शकों को ध्यान में रखता है जिसके लिए लिखना है। ऐसे कई प्रश्न हैं जो चर्चा से उभर सकते हैं- हमारे दर्शकों, हमारी स्मृतियों और हमारे परिपेक्ष्य और भ्रांतियां हमारी दृष्टि को किस हद तक प्रभावित करते है? इतिहासकारों द्वारा समाज का अध्ययन करने के लिए जीवनी का उपयोग कैसे किया जा सकता है? आम तौर पर हम स्मृति को स्वयं के तथ्यात्मक या व्यक्तिपरक विवरण के रूप में मानते हैं, परंतु उन विवरणों कों किस तरह चुना जाएगा और कैसे अभिव्यक्त किया जाएगा और कौन-सी कथा पद्धति किस कहानी के लिए उपयुक्त है, यह भी एक संचित अनुभव है। बाणभट्ट अपने परिवार की वंशावली बताने के लिए मिथक कथाओं और देवी देवताओं का प्रयोग करते है जिसे ऐतिहासिक तो नही माना जा सकता परंतु ये सामाजिक इतिहास का हिस्सा है जो ये जानने में मदद करता है कि समाज या समूह अपने आप को किस तरह से समझता है या समझना चाहता है। ये कुछ ऐसे तरीके हैं जिनके माध्यम से यादों को न केवल ढाला जाता है, बल्कि उनका निर्माण भी किया जाता है, जैसा कि हम इस संदर्भ में देखते हैं कि बाणभट्ट हर्षचारित पर लिखे ग्रंथ का प्रयोग अपने वंश को महिमामंडित करने के लिए भी करते है जिससे दो उद्देश्य सिद्ध होते है। पहला इससे लेखक का पांडित्य सिद्ध होता है और दूसरा इससे लेखन की उपयुक्तता और लोकप्रियता को वैधता मिलती है[5]। बाणभट्ट इस विवरण में करके और "सामूहिक स्मृति" को इंगित करता है।

प्रश्न ये भी पूछा जा सकता है कि हम इन ग्रंथों के साहित्यिक और भाषाई संरचना का अध्ययन कैसे कर सकते हैं? जीवनी, किसी भी अन्य पाठ की तरह, एक कथा परंपरा का पालन करती है। कहानी को एक विशेष दिशा में ढालने के लिए लेखक कथा संरचना का उपयोग कैसे करता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से हर्षाचारित सम्राट् हर्षवर्द्धन के कालखंड को समझने का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है जिससे हमें न केवल हर्ष के बारे में अपितु तत्कालीन सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का भी उल्लेख मिलता है। यद्यपि बाण ने अपने आश्रयदाता का यशोगान एक प्रशस्तिकार के रूप में किया है। तथापि इसमें पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध है।[6] हर्षचरित की प्रकृति प्रशस्ति के रूप मे देखी जा सकती है। बाणभट्ट ने अपनी हर्षचरित में लिखा है वह हूण हिरण के लिए सिंह, सिन्धु राजाओं के लिए तप्त ज्वर, गुर्जर नरेशों की निद्रा भंग करने वाला, गंधार स्वामी के लिए पित्तरोग एवं मालव की भाग्य-लक्ष्मी के लिए कुल्हाड़ी था। इस प्रकार प्रभाकर वर्धन ने तत्कालीन भारत के राजनैतिक मान-चित्त में अपना स्थान बना लिया था। साथ ही बाणभट्ट हर्ष कालीन युद्ध प्रणाली का भी वर्णन करते है जो यद्यपि अतिश्योक्तिपूर्ण है परंतु भारतीय शासन की मेरु प्रणाली के अनुकूल है जहां शासक को धरती और आकाश (अर्थात मानवीय और दैवीय लोक के बीच के मध्यस्थ के रूप में देखा जाता है)।[7]

हर्षचरित के अनुसार वर्द्धन वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। वह शिव का भक्त था और उसने एक नवीन राजकुल की स्थापना की जिसकी राजधानी श्रीकण्ठ थी। इस वंश को वैश्य जाति का कहा गया है। हर्षचरित में पुष्यभूति वंश की वंशावली, समकालीन राज्यों से हर्ष के संबंधों का ज्ञान होने के अलावा इस वंश के राजनीतिक कार्यकलापों का विवरण मिलता है। साथ ही ये उस काल की सांस्कृतिक परिदृश्य को भी दर्शाता है जहां शासक स्वयं को ईश्वरतुल्य या उनसे भी अधिक महान दर्शाने का प्रयास करता है जो कि ये दर्शाता है कि कैसे शासक अपने शासन को राजनैतिक और

[5] D. Devabhuti. - Harsha A Political Study,Oxford Clarendon Press, 1970, p.11.
[6] . Majumdar, R.C. (Ed.) - The Classical Age, Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai, 1997(5th edition).
[7] , R.K. Mukerji- Harsa, Oxford Publication, 1926, p.20.

धार्मिक वैधता देने का प्रयास करता है। बाणभट्ट अपने विवरण में हर्ष को शिव, इंद्र, आदि देवी देवताओं की तुलना में अधिक महान दर्शाते है[8]। हम दो अलग-अलग तरीकों को देख सकते हैं जिसमें बाणभट्ट अपने परिवेश को परिभाषित करता है। एक, हम उनके द्वारा देखे जाने वाले स्थानों की भौगोलिक विशेषताओं का विस्तृत विवरण देखते हैं और उन्हें हर्ष के निवास स्थान, स्थानेश्वर के अनुकूल वातावरण और परिवेश के साथ तुलना करते हैं। जब वह हर्ष के शासन का वर्णन करना चुनते हैं तो वह अपनी समृद्धि के सभी भौतिक प्रतीकों से शुरू करते हैं और इसकी तुलना दैवीय स्वरूपों से करते हैं। हाथी, जिसे वैसे भी समृद्धि के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, हर्ष को और भी अधिक प्रशंसा के अधीन करने से पहले, पाठ को लगभग एक वृहद रूप में बदलने से पहले बड़े पैमाने पर स्तुति की जाती है[9]। इसे वास्तव में शासन की सामग्री और नैतिक ब्रह्मांड की तुलना और तुलना करने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। हर्ष का राज्य न केवल भौतिक समृद्धि के प्रतीकों से भरा एक विषम स्थान है, बल्कि नैतिक रूप से ईमानदार रूप से संचालित दुनिया भी है, जो शासक को कई महान और दिव्य हस्तियों की तुलना में बेदाग और स्थिति में बहुत अधिक बनाता है, जिसे वह लगातार रामायण जैसे ग्रंथों से नाम देता है। और महाभारत, जो न केवल पाठ के अंतःविषय संबंधों को स्थापित करता है बल्कि इन महाकाव्य परंपराओं और हर्ष के राज्य के बीच संबंध बनाने में भी मदद करता है।

बाण शुरू से ही अपनी ब्राह्मण पहचान की घोषणा करते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं और यह ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण पूरे पाठ में निहित है। लेकिन हमें एक रूढ़िबद्ध, वर्चस्ववादी ब्राह्मणवादी व्यवस्था के बारे में नहीं सोचना चाहिए क्योंकि सामाजिक व्यवस्था स्पष्ट रूप से पदानुक्रमित होने के बावजूद हमेशा प्रतिच्छेदन और अंतःक्रिया के बिंदु होते हैं। दूसरे अध्याय में बाना ने अपने से जुड़े लोगों के पूरे समूह को सूचीबद्ध किया है, जो निम्न जाति के पुरुषों, विधवा महिलाओं, नाई, शैंपू आदि जैसे व्यवसायों सहित विभिन्न जाति और व्यवसायों से संबंधित हैं। साथ ही वह अपने भाई के बारे में एक शूद्र मां, अपने पूर्वजों दधीच के बारे में बात करते हैं। क्षत्रिय होकर तपस्वी बनना। यह सब सबसे पहले दर्शाता है कि मानक वर्ण व्यवस्था में अभ्यास का एक क्षेत्र था जो हमेशा सैद्धांतिक मानदंडों के अनुरूप नहीं होता है, और दूसरी बात, समाज में पदानुक्रम मानक आदेश मानने या प्रतिबिंबित करने की तुलना में बहुत अधिक स्तरित होते हैं। लेकिन यह इन पदानुक्रमों की अनुपस्थिति का संकेत नहीं देता है क्योंकि प्रभुत्व और अधीनता का संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जिस तरह से बाना और उसके भाई के बीच शूद्र मां के संबंध को किया गया है। साथ ही हर्ष की तुलना बार-बार मनु से की जाती है जिस तरह से वह वर्ण व्यवस्था को नियंत्रित करता है और कानून और न्यायशास्त्र को बनाए रखता है। यह बयानबाजी वास्तव में सामाजिक व्यवस्था की जटिल व्यावहारिकताओं और पदानुक्रम के स्थान को बनाए रखने के लिए प्रमुख वर्ण की चिंता के बीच संघर्ष की एक परत देती है। साथ ही लैंगिक इतिहास के संबंध में हमको जटिलता देखने को मिलती है जहां यद्यपि स्त्रियों को शासन में उतराधिकार तो नही मिलता परंतु बाणभट्ट विस्तारपूर्वक हर्षवर्धन की बहन राजश्री के राजनैतिक संघर्ष को इंगित करते है जो बताते है कि स्त्रियां परोक्ष रूप से ही सही पर राजनैतिक प्रक्रिया में संलग्न थी[10]।

निष्कर्ष में हम ये कह सकते है कि हर्षचरित राजनैतिक रूप से अनुकूल प्रशस्ति और चरित साहित्य का प्रयोग हर्ष के यशोगान के लिए करते है और अपने वंश का यशोगान इसलिए करते है कि शासक का यशोगान को वैधता मिले। लेखक की वैधता लेखन को वैधता देती है और लेखन की

[8] Singh, G.P. -Ancient Indian Historiography Sources And Interpretations, Reconstructing Indian History And Culture, No.25, Delhi, 2003, p.94.

[9] R.P Shastri,. (ED.)- The Harshacharita by Banabhatta, translated by Cowell & Thomas, Global Sanskrit Literature Series in English, 2012, p.130.

[10] Neeta Sharma, Banabhata A Literary Study,Ph.D., Oriental Publisher, Delhi, 1968, p.63

वैधता शासक को। हर्षचरित को एक जीवनी के रूप में भी समझा जा सकता है और एक राजनैतिक ग्रंथ के रूप में भी, इसे वास्तविक सामाजिक परिदृश्य को समझने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है पर साथ ही इसमें निहित मिथकों के अध्ययन से सांस्कृतिक परिपेक्ष्य को भी जाना जा सकता है। हर्षचरित अपनी शैली और लेखनी दोनो के लिहाज से एक जटिल ग्रंथ है और यद्यपि ये कई जगह प्रत्यक्ष रूप से ऐतिहासिक सूचनाएं प्रदान करता है फिर भी इसकी अतिश्योक्तियों का ऐतिहासिक अवलोकन अत्यंत आवशयक है।

Bibliography

1. Sreedharan, E; *A Textbook of Historiography 500 B.C. to 2000 A.D*. Orient Longman Pvt, Ltd., 2004
2. Das, Sisir Kumar; *A History of Indian Literature 500- 1399, From the Courtly to The Popular*, Sahitya Academy, Delhi, 2005, p.81.
3. Shastri, R.P. (ED.); *The Harshacharita by Banabhatta, translated by Cowell & Thomas*, Global Sanskrit Literature Series in English, 2012, p.130.
4. Sharma, Neeta*; Banabhata A Literary Study, Ph.D*., Oriental Publisher, Delhi, 1968, p.63 .
5. Devabhuti, D.; *Harsha A Political Study*, Oxford Clarendon Press, 1970, p.11.
6. Sankaran, A.; *Some Aspects of Literary Criticism in Sanskrit or The Theories Of Rasa And Dhvan*i, Oriental Publisher & Bookseller, Delhi, 1926, p.45.
7. Mukerji, R.K.*; Harsa*, Oxford Publication, 1926, p.20.
8. Singh, G.P.; *Ancient Indian Historiography Sources and Interpretations, Reconstructing Indian History And Culture,* No.25, Delhi, 2003, p.94.
9. Majumdar, R.C. (Ed.); *The Classical Age,* Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai, 1997(5th edition).
10. Suryanarayana, N.*; Harshacharita*, A.U., Vizianagaram